महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

पी.एच.डी. हिन्दी की उपाधि हेतु प्रस्तुत संक्षिप्त रुपरेखा

[synopsis]

"महीप सिंह की कहानियों में नारी जीवन के विविध रुप :- एक अनुशीलन"

शोधछात्र

मणवर मीरा

शोध निर्देशक

प्रो.(डॉ.) कनुभाई विछिया निनामा

वरिष्ठ प्राध्यापक, हिन्दी विभाग - कला संकाय

महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात - 2023

" महीप सिंह की कहानियों में नारी जीवन के विविध रुप :- एक अनुशीलन "

*** प्रस्तावना :-**

महीप सिंह स्वातंत्र्योत्तर साहित्यकार की पहचान रखते है। हिन्दी साहित्य में निर्मित कहानी को नयी दृष्टि प्रदान करने की कोशिश उन्होंने की है। महीप सिंह ने तत्कालीन नई कहानी और अकहानी कहानी धारा में निहित व्यक्तिपरता और गुटबंदी के प्रति असंतोष प्रकट करने हेतु सचेतन कहानी को एक आंदोलन के रुप में प्रस्तुत किया। महीप सिंह की कहानी में अस्तित्ववादी विचारधारा सकारात्मक दृष्टिकोण जीवन के प्रति आस्था, स्त्री - पुरुष के जटिल रिश्ते, नारी पात्रों, यौन चित्रण की विकृतता,नई - पुरानी पीढी का वैचारिक द्वन्द प्रवर्तमान स्थिति को स्थान दिया है।

सचेतन कहानी आंदोलन की शुरुआत सातवे दशक पूर्व में हुई। यों तो सन् 1950 - 60 के आसपास ही सचेतन कहानी का स्वर सुनाई पड़ने लगा था। लेकिन इसकी विधिवत शुरुआत इलाहाबाद से प्रकाशित होनेवाली आधार पत्रिका के नवम्बर 1964 के सचेतन कहानी विशेषांक से मानी जाती है। इस विशेषांक का संपादन महीप सिंह ने किया था। इस विशेषांक में दस लेखकों ने सचेतन कहानी के मर्म को स्पष्ट किया तथा बीस कहानीकार की कहानियों को प्रकाशित किया गया। जिनकी कहानियों में सचेतन दृष्टि नजर आती थी। इस आंदोलन शुरुआत के समय के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व साहित्यिक परिवेश का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो गया है, कि उस समय चीनी युद्ध एवं अकाल से आर्थिक व्यवस्था चरमरा उठी थी।

सचेतन कहानी के प्रमुख कहानीकार में महीप सिंह, कुलभूषण, आनंद प्रकाश जैन, कमलजोशी, धर्मेंद्वगुप्त, जगदीश चतुर्वेदी, मधुकर सिंह, राजीव सक्सेना, राम कुमार भ्रमर, सुरेन्द्र अरोड़ा, वेद राही, सुखबीर, योगेशगुप्त, मनहर, श्याम परमार, हृदय, हिमांशु जोशी, ममता अग्रवाल, शक्तिपाल, केवल, कुलदीप बग्गा, नरेन्द्र कोहली आदि के नाम उल्लेखनीय है। वैसे सचेतन कहानी आंदोलन की धुरी महीप सिंह और आनंद प्रकाश जैन रहे है।

स्वयंत्रता के बाद से अब तक देश के मध्यवर्ग की चिंताओं सरोकरों और संकटों को महीप सिंह ने झेला भी है और कहानियों में ढाला है। छोटे शहर, महानगर में अपने वाले व्यक्ति के संस्कारों से महानगरीय स्थितियों का टकराव,स्त्री - पुरुष संबंधों के बदलते ढांचे और इस परिवर्तन में मानसिक यातना झेलते लोग, मध्यम वर्ग का पोला और दिखावटी जीवन सांप्रदायिक दंगों का दर्द और उनके वास्तविक कारण, जातिगत भेदभाव और दलित जातियों में उभरती चेतना, भौतिक समृद्धि की अंधी दौड़ सभी कुछ इस लेखक को उद्वेलित करता रहा है।

सन् 1955 से 1963 तक महीप सिंह मुबंई में रहे, बाद में दिल्ली में रहे। इन दोनों महानगरों के परिवेश ही उनकी कहानियों के कथ्य के रुप में उभरे है। उनकी प्रथम कहानी 'मेडम ' सन् 1963 में लिखी गई थी, जो सितंबर 1967 में सरिता में प्रकाशित हुई थी। 'उलझन' उनकी दूसरी कहानी है, जिनकी रचना भी 1963 में हुई थी। यह कहानी व्यापक रूप में प्रसिद्ध रही। कहानी को साप्ताहिक हिंदुस्तान द्वारा आयोजित प्रेमचंद कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

महीप सिंह ने सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति, मानवीय संवेदना, जीवन और जगत के अनुभव, सतेज अन्तॅदृष्टि तथा व्यापक सूझ - बूझ के कारण अब तक 113 से भी अधिक कहानियों की रचना की है। जिन्हें तीन खंडों में विभाजित की गई है। (1) प्रथम खंड - ' सुबह की महक ' (2) द्‌वितीय खंड - ' क्षणों का संकट ' (3) तृतीय खंड - ' संबंधों का सन्नाटा ' इसके सिवाय उन्होंने तीन उपन्यास भी है ' यह भी नहीं ' , ' अभिशेष है ' और ' बीच की धूप भी ' लिखे है।

महीप सिंह की कहानियों में नारी के बहुत सारे संबंधों की चर्चा की है। जिसमें नारी के सारे संबंधों की तरफ लेखक ने ध्यान दिया है। ' सन्नाटा ' कहानी में महानगरीय सभ्यता ने माँ - बेटी के बीच अलगाव पैदा कर दिया है उनका यथार्थ निरुपण है। ' माँ ' कहानी में कामकाजी सहयोगियों के बीच नारी उलझ गई है। ' उजाले के उल्लू ' और ' बाद की बात ' कहानियों में स्त्री - पुरुष के विवाहेत्तर संबंधों का चित्रण किया गया है।

' गंध ' और ' एक थकी हुई शामा ' यह कहानियों में स्त्रियों के साथ संबंध रखकर उसे बदनाम करते है। ' शोर ' और ' सीधी रेखाओं का वृत ' कहानियों में स्त्रियाँ पुरुषों का प्रेम प्राप्त करने के लिए संबंध रखती है। ' एकस्ट्रा ' तथा ' टकराव ' कहानियों में व्यवसायिक दृष्टि से इस्तेमाल होनेवाले स्त्री के विवाहेत्तर संबंध है। ' ब्लाटिंग पेपर ' तथा ' बाद की बात ' यह कहानियों की स्त्रियाँ जीवन साथी की तलाश में धोखा खाती है।

कामकाजी स्त्री होने के कारण दफ्तर के पुरुष सहयोगी से उसके संबंध बन जाते है और वह नाम नहीं ले पा रही है। ' धिरे हुए क्षण ' , ' टकराव ' एवं ' एक थकी हुई शामा ' इसके उत्तम उदाहरण है। उसमें भावुकता का अंश समाप्त होता जा रहा है। वे सब अवसरवादिता की तरफ झुक रही है। बाद में मतलब समाप्त हो

जाने पर दूध से मक्खी की तरह निकालकर फेंक देती है। आज की स्त्री अपनी पहचान खुद बनाना चाहती है। सारे संबंधों को बनाए रखते हुए भी वह अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहती है।

महीप सिंह ने नारी देह व्यापार की मजबूरी को अपनी ' पेरिस रोड ' कहानी में उठाया है, जहाँ औरत को उसका मर्द ही देह व्यापार के लिए मजबूर करता है। इस कहानी में कुलबीर देह व्यापार को मोहल्ले से हटवाने में सफल तो हो गया, किन्तु वह गंदगी दूर होकर कहाँ गई इस पर अभी भी प्रश्न चिह्न लगा हुआ है। ' गमले का फूल ' कहानी में बिनब्याही माँ की समस्या का चित्रण किया है। जहाँ प्रेमी दकियानूसी विचारों का विरोध कर शादी कर लेता है, किन्तु उसी पति को अपनी पत्नी की अपने मित्रों के साथ उन्मुक्तता चुभने लगती है।

स्त्री के हर रुप को चित्रित करना मानो महीप सिंह का उद्देश्य है। कुछ नारी पात्रों में स्व की भावना इस कदर भरी है कि उन्हें लगता है कि रिश्ते नाम की कोई चीज नहीं होती। ' ऐसा ही है ' कहानी का मुख्य पात्र मिसेज जोशी पति को सुरक्षा कवच से अधिक नहीं समझती।

' पति ' कहानी की मालती अर्थात कर्नल की पत्नी समाज सेवा करना चाहती है। वह अपने रुतबे को भूलकर समाज के निम्न वर्ग में धुल - मिल जाना चाहती है। सामाजिकता की भावना से परिपूर्ण मालती लोगों के दुख दर्द को दूर करना चाहती है। लेकिन पुरुष का दंभ आडे आता है। वह पत्नी को बनाना चाहता है।

महीप सिंह का एक नारी पात्र अपने आप में बहुत ही जटिल है। ' मैडम ' कहानी की नायिका जो बहुत रहस्यमयी एवं विचित्र पात्र है। वास्तव में उसका बचपन पिता या भाई के संरक्षण एवं स्नेह के अभाव में बिता। इसलिए वह किसी

पुरुष के सान्निध्य को पाने की चेष्टा में रहती है। वह स्पष्ट कहती है, मैं पुरुष का प्रेम चाहती हूँ । किसी भी शर्त पर, किसी भी मूल्य पर। नहीं तो अकेली पड जाऊंगी। मैडम का चरित्र न केवल आत्म सजग है बल्कि स्त्री मन का इतना सटीक विश्लेषण नहीं ओर देखने को नही मिलता।

कहा जा सकता है कि महीप सिंह सामाजिक, आधुनिक महानगरीय की जटिलता को अपनी कहानियों में बखूबी व्यक्त किया है। महीप सिंह के नारी पात्र ' स्व ' की खोज में निरंतर संघर्षरत और गतिशील है। फिर भी वे अकेलापन, संत्रास और अजनबीपन झेल रहे है। इन पात्रों में जिजीविषा तथा आस्था भी बनी रहती है। ये नारी पात्र अपने अहम के प्रति भी सचेत है और विभिन्न संबंधों के प्रति अपना उत्तरदायित्व भी निभाते है। शायद इसी कारण वे नैतिक संकट में धिरे नजर आते है और दुविधाग्रस्त जीवन जीने के लिए अभिशप्त है।

*** शोध प्रविधि :-**

प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से किया जायेगा। इसमें व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है।

महीप सिंह की कहानियों में महानगर में नारी पात्रों की विषमता पूर्णत: चित्रित हुआ है। उनके तीन कहानी संग्रहों की कहानियों की मैं विस्तृत विवेचना करुंगी, उनके तीन संग्रह इस तरह है (1) ' सुबह की महक ' (2) ' क्षणों का संकट ' (3) ' संबंधों का सन्नाटा ' इन कहानी संग्रहों में नारी पात्रों की विडम्बना, समस्या, संबंधों का बिखराव आदि केन्द्र में है। अभी तक ज्ञात स्त्रोतों के आधार पर कई विश्वविद्यालयों में महीप सिंह पर शोध हो चुका है और चल भी रहा है, जिसमें एक शोध प्रबंध के.एस.के.वी. कच्छ विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डॉ. सुशील

जी. धर्मानी मार्गदर्शन के नीचे शोधार्थी माला नागदान जीवा जी ने " महीप सिंह और चंद्रकान्त बक्षी की कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन (मानवीय संबंधों के विशेष परिप्रेक्ष्य में) के शीर्षक से शोध कार्य किया है और दूसरा शोध प्रबंध अशोककुमार यादव ने " कहानीकार महीप सिंह: - मानवीय संबंधों की सचेतन दृष्टि " के शीर्षक से शोध कार्य किया है। मेरे द्वारा चुना गया विषय " महीप सिंह की कहानियों में नारी जीवन के विविध रुप :- एक अनुशीलन " पर ज्ञात सूत्रों के अनुसार संभवत अभी तक किसी विश्वविद्यालय में शोध कार्य नहीं हुआ है।

अध्ययन हेतु उपरोक्त विषय को आधार बनाने से एक तो सचेतन कहानी में महीप सिंह का महत्तम योगदान का संपर्क मूल्यांकन संभव हो सकेगा, दूसरा महीप सिंह की कहानियों में शहरी जीवन में अवरोधों, अन्तरविरोधों और प्रतिकूलताओं के विरुद्ध नारी पात्रों की संघर्ष चेतना की परख करना, साथ ही नारी जीवन की शक्तियां, संघर्ष, कैसे - कैसे संबंधों में नारी का संघर्ष है, उसी संदर्भ में महीप सिंह की कहानियों में पहचान भी हो सकेगी। इसी उद्देश्य से मैंने अपने शोध की संक्षिप्त रुप रेखा तैयार की है, जिनको मैंने निम्नलिखत अध्यायों में विभाजित करने का प्रयास किया है।

*** शोध प्रबंध रुपरेखा :-**

" महीप सिंह की कहानियों में नारी जीवन के विविध रुप : एक अनुशीलन "

प्रथम अध्याय :- हिन्दी कहानी की विकास यात्रा

द्वितीय अध्याय :- महीप सिंह का जीवन तथा साहित्यिक परिचय

तृतीय अध्याय :- भारतीय साहित्य में नारी

चतुर्थ अध्याय :- महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण

पंचम अध्याय :- महीप सिंह की कहानियों में नारी की भूमिकाएँ

षष्टम अध्याय :- हिन्दी कहानियों में चित्रित महानगरों की जीवनशैली

सप्तम अध्याय :- महीप सिंह की कहानियों में शिल्प - विधान की विशेषताएँ

* उपसंहार

* संदर्भ ग्रंथ- सूची

प्रथम अध्याय :- हिन्दी कहानी की विकास यात्रा

कहानी सुनने, पढ़ने और लिखने की एक लम्बी परम्परा हर देश में रही है, क्योंकि यह मन को रमाती है और सबके लिए मनोरंजन होती है। आज हर उम्र का व्यक्ति कहानी सुनना या पढ़ना चाहता है यही कारण है कि कहानी का महत्व दिन - दिन बढ़ता जा रहा है। कहानी के माध्यम से एक व्यक्ति के विचार दूसरे व्यक्ति तक पहुँच जाते है। विद्वान आलोचक कहानियों का आरंभ ऋग्वेद से मानते है। वेदों, उपनिषदों तथा ब्राह्मणों में वर्णित ' यम-यामी ' , ' पुरुखा - उर्वशी ' , ' सौपर्णी - काद्वाव ' , ' सनत्कुमार - नारद ' , ' गंगावतरण ' , ' नल - दमयन्ती ' जैसे आखायान कहानी के ही प्राचीन रुप है।

कहानी हमारे दैनिक, सामाजिक, राजनैतिक या पारिवारिक जीवन का एक पहलू चित्रित करती है। इसमें हमारे देश, समाज, जीवन तथा युग की कोई आकर्षक झलक दिखाई जा सकती है। किसी धटना या कार्य व्यापार की अवतारणा हो सकती है। कहानी की परिभाषा देखी जाए तो -

" कहानी एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रभावित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। "

- मुंशी प्रेमचन्द

" कहानी एक वह कथात्मक लधु गध रचना है, जिसमें जीवन की किसी एक स्थिति का सरस सजीव चित्रण होता है। "

- डॉ. रामप्रकाश

कहानी एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है, जिसमें वास्तविक जीवन यथार्थ तथा मानव के अंतर्जगत की जटिल चेतना का विश्लेषण होता है। कक्षा-समिक्षकों ने कहानी के मूल्यांकन के लिए उन प्रमुख आधारों को खोजा है जिनपर कहानी का रचना विधान खड़ा होता है। इन्ही आधारों को कहानी के तत्व नाम से अभिहित किया गया है। शास्त्रीय समीक्षा द्वारा निर्धारित कहानी के प्रमुख तत्व मुख्य रुप से छः माने गये है। (1) कथावस्तु या कथानक (2) पात्र और चरित्र - चित्रण (3) संवाद या कथनोपकथन (4) देश-काल और वातावरण (5) भाषा - शैली (6) उद्देश्य।

इंशा अल्ला खां की ' रानी केतकी की कहानी ' हिन्दी कहानी की प्रथम कहानी मानी जाती है। किशोरीलाल गोस्वामी की ' इन्दुमति ' , माधवप्रसाद मिश्र की ' मन की चंचलता ' , रामचंद्र शुक्ल की ' ग्यारह वर्ष का समय ' , बंग महिला की ' दुलाईवाली ' , माधवराय की ' एक टोकरी भर मिट्टी ' आदि कहानियों हिन्दी साहित्य के प्रथम दौर की कहानियाँ मानी जाती हैं। इन कहानियों में कलात्मकता का अभाव रहा है।

भारत देश स्वतंत्र हुआ इसके पहले निर्मित कहानियाँ तीन काल खंडों में विभाजित किया गया है, (1) भारतेन्दु युग (सन् 1850 से 1900) , (2) प्रेमचन्द युग (सन् 1915 से 1936) , (3) प्रेमचन्दोतर युग ,(सन् 1937 से 1947)। जबकि

भारत देश स्वतंत्र हुआ इसके बाद के समय को स्वातंत्र्योत्तर युग से जाना जाता है, इस युग का समय सन् 1950 के बाद का माना जाता है। जबकि स्वातंत्र्योत्तर समय में ' नई कहानी ' , ' समकालीन कहानी ' , ' सठोत्तरी कहानी ' , ' सचेतन कहानी ' , ' अकहानी ' , ' सहज कहानी ' , ' समांतर कहानी ' , ' जनवादी कहानी ' , ' सक्रिय कहानी ' नामक आंदोलन में हिन्दी कहानी प्रवाहित हुई है। इन सभी आंदोलन का मूल आधार विशेष सोच या दृष्टि पर रहा है।

भारतेन्दु युग की कहानियों के कथानक सामान्यतः स्थूल तथा वर्णनप्रधान है। उनमें धटनाओं के कौतुलहलपूर्ण चमत्कार की प्रधानता है तथा लेखकों का आग्रह, संयोग, तत्व व आकस्मिकता के प्रति खूब रहा है। इस युग की कहानियों के पात्र अभिनयशील और भावुक है। कहानियों में वातावरण का चित्रण अवश्य है मगर वातावरण पात्रों के साथ धुलामिला न होकर वर्णन के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस युग की कहानियों में उद्देश्य भावना को खूब पोषण मिला है। लेकिन इस युग तक हिन्दी परिपक्व स्थिति तक भी नहीं पहुँची थी। कहानियों में संवादों का अभाव है। फिर भी इस युग के कहानीकारों के कहानियों को राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना की जमीन दी।

प्रेमचन्द युग की कहानियाँ आदर्शवादी तो है, किन्तु उनके कथानक संघर्ष के यथार्थ को महत्व देते है। प्रेमचन्द की कहानियों के पात्र यथार्थ की भूमि पर खडे है। यधपि इस युग की कहानियों के पात्र यथार्थ और आदर्श के द्वंद में फंसे भावुक और कृत्रिम से रह गए है। प्रेमचन्द युग में कहानी में वातावरण का चित्रण किसी भाव की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के लिए होता है। साथ ही पात्रों के मनो - व्यापारों को उद्दधाटित करने कै लिए भी हुआ है। और कहीं - कहीं वह प्रतीक के रुप में भी आया है। इस युग की कहानियों को उपदेशात्मक नहीं कह सकते मगर

सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के प्रति कहानीकारों का आग्रह अवश्य रहा है। इस युग की कहानी में व्यवहारिक मनोविज्ञान का उपयोग भी सफलता से हुआ है।

प्रेमचन्दोतर युग की कहानियों में वातावरण का उपयोग कहानी के पात्रों के जटिल अनुभवों के सहभोक्ता के रुप में हुआ है। वातावरण न तो उद्दीपन के लिए है और न कहानी में कोई पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के लिए। वह तो पात्रों के संघर्ष का अंग है। इस युग की कहानी मनुष्य की आंतरिक और बाह्य समस्याओं का सीधा साक्षात्कार करती है। कहानीकार भी शिल्प के प्रति भी बहुत सचेत रहे है तथा प्रतीक एवं बिंब योजना नये ढंग से हुई है। शैली की दृष्टि से अनेक प्रयोग इस काल के कहानीकारों ने किए है तथा उन्होंने कलात्मक तत्वों का उपयोग वास्तविक जीवन का मर्म समझाने के लिए किया है। इस युग की कहानी की भाषा सहज तथा वास्तविक जीवन की भाषा के अधिक निकट है। उसमें कृत्रिमता एवं सायास कलात्मकता का प्रभाव है।

स्वातंत्र्योत्तर युग हिन्दी कहानी में इतिहास में चतुर्थ विकास काल के अंतर्गत स्वातंत्र्योत्तर युगीन कहानी का उल्लेख किया जाता है। इस युग में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं दार्शनिक आदि कहानियाँ लिखी गयी। इस युग के प्रमुख कहानीकारों में अमृतलाल नागर का नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी कहानी साहित्य में मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, उषा प्रियवंदा, मेहरुन्निसा परवेज आदि लेखिकाओं की अलग पहचान है। जिन्होंने आधुनिक नारी की स्थिति, पारिवारिक संघर्ष आदि को कहानियों में उभारा है। बीसवीं सदी के अन्त तक आते - आते हिन्दी कहानी सिर्फ पाश्चात्य कहानी की अनुभूति तक सीमित न रहते हुए अपनी अलग पहचान बना लेती है। हिन्दी

कहानी का विकास यात्रा हमें अतीत, वर्तमान और आने वाले भविष्य के बारे में अवगत कराती है।

द्वितीय अध्याय :- महीप सिंह का जीवन तथा साहित्यिक परिचय

किसी भी रचनाकार का साहित्य जगत खुद के जीवन प्रसंगों से प्रभावित हुए बिना नही लिखा जाता। रचनाकार अपने निजी अनुभव, सोच, दृष्टि आदि स्वानुभव साहित्य में जाने अनजाने निरुपित कर देता है। इसीलिए किसी रचनाकार के साहित्य को समझने, परखने और विश्लेषित करने के लिए उनके जीवन से संबंधित परिस्थितियों को जानना आवश्यक प्रतीत होता है। लेखक अपने युग के प्रति अपनी दृष्टि आने वाली पीढियों को देता है। यहाँ महत्वपूर्ण है एक तो वह युग जिसमें वह पैदा हुआ है और दूसरे वह दृष्टि जो उसने इस युग में जीत हुए अर्जित की है।

कहानीकार डॉ. महीप सिंह का जन्म 15 अगस्त 1930 को उत्तरप्रदेश के जिला उन्नाव की अजगैन तहसील के अन्तर्गत नयी सराय नामक गाँव के एक सिख परिवार में हुआ। उनके माता - पिता ज्यादा पढ़े - लिखे नहीं थे और उनके पिता कपड़े बेचने का साधारण कारोबार करते थे। महीप सिंह ने ज्यादातर पढ़ने का काम कानपुर में ही प्राप्त किया था। कानपुर की डी.ए.वी. कॉलेज से एम.ए.और आगरा विश्वविद्यालय से ' गुरु गोविंद सिंह और उनकी कविता ' शोध कार्य संपन्न कर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। उन्होंने सन् 1955 से 1963 तक मुंबई खालसा कॉलेज और सन् 1963 से 1993 तक यानी सेवा - निवृति तक दिल्ली की खालसा कॉलेज में अध्यापक का कायॅ किया। सन् 1974 से 1975 एक साल के लिए ' कान्साई विश्वविद्यालय ' - जापान में मुलाकाती प्राध्यापक के रुप में उन्होंने योगदान दिया है।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय, पंजाबी अकादमी, हिन्दी संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, भाषा विभाग तथा अन्य संस्थानों द्वारा महीप सिंह को पुरस्कृत एवं सम्मानित किए गए है। महीप सिंह ने ब्रिटन, होगकोग, सिंगापुर, जापान, थाईलेन्ड, पाकिस्तान आदि देशों का प्रवास किया है। उन्होंने दूरदर्शन के धारावाहिक कार्यक्रमों में भी कार्य किया है। परिवार में साहित्यिक वातावरण नहीं था। उन्हें स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता का शोक था। खुद स्वाभिमानी एवं मितभाषी है।

महीप सिंह जी का विवाह 20 नवम्बर 1953 को 23 वर्ष की आयु में सुरजीत कौर के साथ सम्पन्न हुआ। इनका भरा पूरा परिवार है। इनके एक बेटी और दो बेटे है। इनकी खुशहाली के पीछे पत्नी श्रीमती सुरजीत कौर का बहुत बड़ा हाथ है। महीप सिंह और सुरजीत कौर ने दाम्पत्य जीवन का सुन्दर आदर्श समाज के सामने रखा है। उनकी पत्नी सुधड गृहिणी है और उनका गृहस्थ जीवन सुशील एवं समर्पित जीवन संगिनी के साथ बहुत शांत और संतुष्ट चलता रहा है।

24 नवम्बर 2015 (भारत) सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. महीप सिंह का 24 नवम्बर को दोपहर दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। महीप सिंह गुडगांव की पालम विहार कॉलोनी में अपने बेटे संदीप सिंह के साथ रहते थे। 85 वर्षीय महीप सिंह मेट्रो अस्पताल में भर्ती थे।

महीप सिंह का साहित्य सर्जन :-

हिन्दी साहित्य जगत में महीप सिंह का आगमन उनकी पहली कहानी ' उलझन ' (1950) से हुआ था। ' साप्ताहिक हिंदुस्तान ' द्वारा आयोजित ' प्रेमचंद प्रतियोगिता ' में ' उलझन ' कहानी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इसी

' उलझन ' (1950) कहानी से लेकर ' ऐसा ही है ' (2002) कहानी संग्रह तक सात कहानी - संग्रह प्रकाशित हुए हैं .....

(1) ' सुबह के फूल ' (सन् 1951 ई.स.)

(2) ' उजाले के उल्लू ' (सन् 1964 ई. स.)

(3) ' धिराव ' (सन् 1968 ई. स.)

(4) ' कुछ और कितना ' (सन् 1973 ई. स.)

(5) ' कितने संबंध ' (सन् 1979 ई. स.)

(6) ' धूप की ऊँगलियों के निशान ' (सन् 1993 ई. स.)

(7) ' ऐसा ही है ' (सन् 2002 ई. स.)

महीप सिंह की अब तक की सभी कहानियाँ तीन खंड में विभाजित किया गया है। जो तीनो खंड में सारी कहानियाँ सन् 2002 में प्रकाशित की गई है |

खंड - 1 ' सुबह की महक '

खंड - 2 ' क्षणों का संकट '

खंड - 3 ' संबंधों का सन्नाटा '

महीप सिंह का ज्यादातर योगदान कहानी साहित्य में रहा है। उन्होंने सिर्फ तीन उपन्यास ' यह भी नहीं ' , ' अभी शेष है ' , और ' बीच की धूप ' भी लिखे हैं। कहानी लेखन के अलावा महीप सिंह ने कई पत्र - पत्रिकाओं में संपादन कार्य किया है। जिसमें ' सचेतना ' (1966) पत्रिका प्रमुख है। निबंध, जीवनी, बाल - साहित्य, व्यंग्य और संपादन कार्य में भी उन्होंने अपनी कलम चलाई है।

इस तरह स्वातंत्र्योत्तर समय से लेकर पाँच दशक तक महीप सिंह का रचनाकाल रहा है।

तीसरा अध्याय :- भारतीय साहित्य में नारी

" यत्र नायास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। " सदियो से नारी को समाज का अभिन्न अंग मानते आए है। संस्कृति, धर्म एवं सम्यता के निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नारी आदिम संस्कृति का स्थान है। नारी एक माता, बहन, बेटी, सांस, बहु, भाभी, ननंद आदि की भूमिका निभाती है। प्राचीनकाल, वैदिककाल, उत्तर वैदिककाल, उपनिषद काल, रामायण एवं महाभारत काल, पौराणिक काल, बौध्द्वकाल, राजपूत काल, मध्यकाल, आधुनिककाल या ब्रिटिश काल, स्वतंत्र्योतर काल यह विभिन्न कालों में नारी के स्थिति परिस्थितियों या परिवेश की उपज रही है।

आज हमारे वर्तमान भारतीय समाज में नारी कई सारे क्षेत्रों में देखने को मिलती है - आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, परिवार, विवाह संस्था, वैयक्तिक आदि क्षेत्रों में नारी अपना कर्तव्य अच्छी तरह निभाती है।

भूतकाल से वर्तमान तक नजर डाले तो नारी का इतिहास अत्यन्त ही गौरव पूर्ण रहा है। ग्रामीण परिवेश में लगभग आधा भाग नारियों का है, ग्रामीण विकास में नारियों को अनदेखी नहीं की जा सकती है। ग्रामीण महिलाओं का जीवन अत्यधिक श्रमसाध्य है। नगरीय परिवेश में नारी पर नगर का रहन - सहन देखने को मिलता है। शहर में रहनेवाली नारी के पोशाकों अजीब से पहनती है, जिससे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक उत्पीडन देने वाली छेड़खानी की इन धटनाओं का नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता।

हिन्दी कथा साहित्य में नारी जीवन के द्वंद का भी बड़ा ही मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है और उसे द्वंदों से मुक्ति दिलाकर उसकी स्वंतत्रता के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया है। हिन्दी साहित्य में देखा जाए तो काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, अन्य साहित्य में नारी को साहित्यकारों ने लिखकर बताया है।

महीप सिंह की कहानियों के पात्र में अधिकांश नारी जीवन को जीने के साथ - साथ जानने में भी रत दिखाई देती है। वह आज के जीवन की तमाम समस्याओं से धिरे हुए हैं, नसों को तडका देने वाले तनाव में भी गुजर रही है। निराशा और हताशा उन्हें जड बना देने की हद तक ले जाती है, लेकिन वह इससे बाहर निकलने का प्रयास करना नहीं छोडती है। नारी जीवन से भागने की कोशिश नहीं करती बल्कि जीवन की ओर भागती है। वे तीव्र गति से जीवन पद्धति में आते परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने वाली असहज स्थितियों में सहज होने का प्रयत्न करती दिखाई देती है।

महीप सिंह की कहानियों की गृहिणी अधिकांश भारतीय नारी का परम्परागत चित्र प्रस्तुत करती है। इनकी कहानियों के पुरुष मात्र बेजिम्मेदार और दुबॅलताओं से ग्रस्त है, जबकि महिला पात्र विपरित परिस्थितियों के बीच अलग रास्ता चुनती हुई सबल और जिम्मेदार मालूम होती है। साथ ही साथ शिक्षा के प्रसार से नारी ने अपनी अस्मिता को पहचाना है। वह अब पहले जैसी नहीं रह सकती। महीप सिंह की कहानियों में नारी एवं स्व के प्रति जागृत होती दिखाई देती है।

चतुर्थ अध्याय :- महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण

महीप सिंह ने कहानी के माध्यम से ही साहित्य में प्रवेश किया है। उनका कहानी साहित्य विशाल एवं समृद्धमय है। उनकी कहानियाँ जीवन के विविध यथार्थ

को विविध आयामों को प्रकट करती है। मनुष्य को उसके ' स्व ' से जिन्दगी को जिन्दगी से अवगत कराती है।

कथावस्तु कहानी का मूलभूत तत्व है। कथानक के सहारे कहानी का सर्जन होता है। कहानी की धटनाओं के संयोजन के लिए रचनाकार को सावधानी बरतनी पड़ती है। सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति, मानवीय संवेदना, जीवन और जगत के अनुभव, सतेज अंतरदृष्टि तथा व्यापक सूझ - बूझ के कारण उन्होंने अब तक 113 से भी अधिक कहानियों की रचना की है। यह सारी कहानियों तीन खंड में विभाजित है।

यहाँ पर तीन खंडों में से नारी पात्रों वाली चुनी हुई कहानियों का विश्लेषण किया गया है। (1) ' सुबह की महक ' खंड में कुल 39 कहानियों का संग्रह है, इसमें से मैंने 12 कहानियों को ली है। (2) ' क्षणों का संकट ' खंड में कुल 39 कहानियों का संग्रह है, इसमें से मैंने 16 कहानियों को ली है। (3) ' संबंधों का सन्नाटा ' खंड में कुल 34 कहानियों का संग्रह है, इसमें से मैंने 8 कहानियों को ली है।

यहाँ पर चुनी हुई नारी पात्रों वाली कहानियों का विस्तार से विश्लेषण असंभव है। इसलिए जो तीन खंडों में से जो चुनी हुई कहानियों ली गई है उसमें से मैंने सभी खंड में से एक ही कहानी के कथ्य का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। जो निम्नलिखत है -

(1) प्रथम खंड - ' सुबह की महक '

* ' उलझन '

कहानी ' उलझन ' में महेन्द्र - सुरजीत के दांपत्य जीवन को प्रकट किया है। महेन्द्र अपने छोटे - छोटे कार्य के लिए अपनी पत्नी पर निर्भर रहता है।

जबकि उसकी पत्नी सुरजीत पूरा दिन धर काम और बेटी (पप्पी) को संभालने में व्यस्त रहती है। उपर से उसे अपने पति की झिडकियाँ झेलनी पड़ती है। एक बार खाना देरी से बनने पर महेन्द्र पत्नी पर गुस्सा करता है। इसके कारण पति - पत्नी के बीच अनमेल हो जाता है। अनमेल होने पर महेन्द्र भी अपने कायॅ खुद कर लेता है। वह पत्नी पर निभॅर नहीं रहता। महेन्द्र के इस बदलाव से सुरजीत के हृदय को चोट लगती है। एक सप्ताह तक अनमेल बना रहता है। दूसरे सप्ताह सुरजीत पति के बालों में तेल डालने के बहाने बात करना चाहती है। लेकिन महेन्द्र अब भी बात करने को तैयार नहीं था। जिससे सुरजीत रो पड़ती है। सुरजीत की आँखों में आँसू देखकर महेन्द्र सिंह कहता है, " तुम औरतों को समझाना तो भगवान के भी बस में नहीं। "

इतना कहते हुए महेन्द्र सिंह पत्नी के हाथों तेल डलवाने के लिए राजी हो जाता है। इस तरह कहानी के अन्त में पति - पत्नी के बीच सुलेह हो जाती है।

(2) द्‌वितीय खंड - ' क्षणों का संकट '

* ' ब्लाटिंग पेपर '

' ब्लाटिंग पेपर ' कहानी में इस समय के बदलते परिवेश में स्त्री - पुरुष के प्रेम संबंधों में भी परिवर्तन पाया जाता है। दोनों के बीच प्रेम में एकसूत्रत्मकता होनी चाहिए वह नही दिखाई देती। आजकाल प्रेम में नैतिक मूल्य न मानते हुए, केवल प्रणय संबंध तक सीमित माना जाने लगा है। इस कहानी में प्रीति बार - बार संबंध से धोखा खाकर टूटती फिर भी आशाभरी दृष्टि से एक अन्य पुरुष की तलाश में जुटी लग जाती है। प्रीति प्रारंभ में प्रेम और वासना के भेद को नही जान पाती है। जब वह जानने लगती है तब वह अपने आपको ब्लाटिंग पेपर की संज्ञा देती है। पहला प्रेमी समीर है, दूसरा प्रेमी मनोहर है, तीसरा प्रेमी जगदीश है।

बहोत सारे लोग प्रीति की जिन्दगी से डंका बजाते हुए निकल गये थे। अन्त में हताश होकर प्रीति अपनी डायरी में लिखती है " इच्छा होती है कि कीसी अन्धे आदमी से शादी कर लूँ। दूर नदी के किनारे एक गाँव में अपनी झोंपड़ी डाल लूँ। फिर उस अन्धे की इतनी सेवा करुं कि उसे लाठी की भी जरुरत न रहे। पूरे विश्वास के साथ वह अपने को मुझे सौंप दे एक बच्चे की तरह ..... निश्शंक होकर। "

इस प्रकार कहानी में पुरुष की स्वार्थपरिता, कामपिपासा एवं मूल्यहीनता का चित्रण हुआ है। स्त्री की लाचारी, निश्चलता, विश्वास और समर्पण का सफल चित्रण हुआ है। यह उपभोकता समाज की देन है कि आज हर संबंध एवं उसके भावनाएँ मात्र उपभोग की सामग्री बनकर रह गये है।

(3) तीसरा खंड - ' संबंधों का सन्नाटा '

* ' कल '

यह कहानी महानगरीय अकेलेपन को चित्रित करती है। कहानी में एक नारी बढ़ती आयु में अपने परिवार से अलग रहना पड़ता है। वह अपनी जिन्दगी अपने हिसाब से जीती है। जस्सी नामक नारी व्यापक दृष्टिकोण वाली महिला है। विधवा जस्सी दिल्ली में अकेली रहती है। पति की मृत्यु के बाद उसे बुरे दिन देखने पड़ते है। उसका लड़का शादी के बाद अपनी बहू को लेकर कनाडा जा बसता है तथा लड़की भी शादी के बाद उससे मिलने नही आती क्योंकि उसके पति का उसकी माँ के साथ कुछ अनबन है। जस्सी धर में अकेली रह जाती है, परन्तु यह समय उसे खलता नही है। ऐसी परिस्थिति में भी वह अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल बनाकर उनके साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करती है। " इन्दर उसका बड़ा बेटा जो नियमित रूप से मुझे याद करता है। दिसम्बर में उसका नये साल की

बधाई वाला काडॅ आ जाता है। जून में वह मेरे जन्म दिन पर एक काडॅ भेजता है। "

अकेलापन महानगर की देन है। दिल्ली जैसे महानगर में अकेले जीवन यापन करना खतरे से खाली नही है। फिर भी जस्सी जैसे लोग हर दिन अपनी मृत्यु के भय में आशंका में कल और आज के बीच के फासले कम करते जीने पर विवश है।

महीप सिंह की कहानियाँ लगभग महानगर के मध्यम परिवार के उद्वधाटित
नारी की है, जिनमें व्यक्ति, परिवार, समाज के बीच बनते बिगड़ते संबंधों का चित्रण हुआ है। ज्यादातर कहानियाँ के अध्ययन से पता चलता है कि नारी के जीवन से संबंधित है। नारी के साथ - साथ उनके आस - पास रहने वाले व्यक्तियों के साथ जूड़ा है।

पंचम अध्याय :- महीप सिंह की कहानियों में नारी की भूमिकाएँ

यह बात स्वाभाविक है कि जिस साहित्यकार को समाज में व्याप्त विसंगतियों पीड़ित करती है, वही साहित्यकार समाज के खोखलेपन को उभारने में सफल रहता है। महीप सिंह समाज में नारी की समस्याओं, उसकी वेदना, दर्द , उसकी भूमिकाएँ और विसंगतताओं ने प्रभावित किया है। महीप सिंह की कहानियाँ वस्तुत: उनकी खुद के भोगी हुई परिस्थितियों की उपज है। इनकी कहानियों में नारी पात्र सामाजिक को अधिक से अधिक तरजीह देते है। अधिकतर मध्यमवर्गीय परिवारों से आए पात्रों की कहानियाँ है। उनके नारी पात्र शिक्षित व आत्मनिभॅर है।

तलाकशुदा जीवन में नारी की भूमिका में पति - पत्नी संबंधों का अध्ययन करने के प्राश्चात् कहानी के नारी पात्र शिक्षा व पाश्चात्य प्रभाव से नारी में जागृता को

लेकर सजगता बढ़ रही है। नारी अब आत्मनिर्भर हो गई है, वह अपने पति या दूसरे किसी के हाथ नीचे दबकर नही रहनेवाली है। पति - पत्नी में आए इस बदलाव को सहज रुप से स्वीकृति देने में असमर्थता महसूस कर रहा है। जहाँ पति ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकृति दी है, वही पर उनके संबंध मधुर है और जहाँ पुरुष उसे अपने अनुसार चलाना चाहे वही पर उनका दाम्पत्य जीवन कुत्सित होने लगता है। आज के समय में नारी पुरुष को जीवन का भागीदारी का एक जीवन साथी मानती है, भगवान नही। ऐसे ही कहा जाए तो नारी की परिवर्तित दृष्टि, स्वतंत्र बनकर रहने की चाह यही सब भूमिका नजर आती है।

मित्र एवं कामकाजी सहकर्मी संबंध में नारी की भूमिका में एक नारी पुरुष मित्र क्यों नही बना सकती ? नारी के संबंधों में आता बदलाव और उसका जो परिणाम को उपजती उलझने एवं तनाव महीप सिंह की उन कहानियों में अधिक उभरा है, जहाँ वे कामकाजी और सहकर्मी नारी को कहानी के केन्द्र में रखते है। यह भी स्वाभाविक है कि नारी ही संबंधों के ढाँचे में आते परिवर्तनो की कारक भी है और उनसे सर्वाधिक प्रभावित भी। इसी की उलझी हुई मानसिकता में इन संबंधों की उलझनों के बीच मौजूद है एक नारी। नारी और पुरुष के बीच पहले जैसी प्रगाढ़ता नहीं रही है। नारी कामकाजी होने के बावजूद वह अपनी कभी भी किसी भी जगह अपनी जो भूमिका है वह निभाना नहीं भूलती है।

विवाहेत्तर संबंध में नारी की भूमिका में प्रत्येक समाज में विधिवत् विवाह के बाद ही स्त्री - पुरुष को पति - पत्नी का दर्जा मिलता है। विवाहेत्तर संबंधों के अनेक रुप रंग दिखाई पड़ते है। इनमें बहुत लम्बें समय तक चलने वाले प्रेम संबंध, कुछ समय बिताने के लिए संबंध, नारी की सोहबत से एकरस जीवन में कुछ सरसता लाने की इच्छा वाले संबंध, मित्रता के रुप में और नौकरी या व्यावसाय में

उपयोग होने वाले संबंध भी है। विवाहेत्तर संबंध में नारी के साथ स्वार्थपूर्ण प्रेम को प्रकट किया गया है। ज्यादातर संस्कारों से दबा प्रेम, यौनशोषण, पूर्ण समर्पण का अभाव, निर्णय - अनिर्णय में जूझती नारी, सब उभरकर सामने आते है।

विवाह के पहले प्रेम संबंध में नारी की भूमिका में हमारे आस - पास समाज में विवाह के पूर्व के संबंध में स्त्री - पुरुष दोनों ही जिम्मेदार है। आधुनिकता की चकाचौंध में मानव सुख को ढूँढता है। ऐसे संबंध बहुत पहले से चले आते है, मगर स्वातंत्र्योत्तर युग में इन संबंधों को बहुत बढावा मिल रहा है। हरेक समाज, ज्ञाति में ऐसे संबंधों को भर्त्सना की जाती है, मगर फिर भी बढावा मिलता रहता है। इस संबंधों में आज की युवा पेढी या नारी के लिए वह वक्त बिताने के मौज - मस्ती करने के लिए ज्यादा रह गये है। नारी प्रेम संबंध पूरी भावना के साथ निभाती है, मगर पुरुष उसका दिल तोड देता है। भावुकता में आकर प्रेम संबंध आजकल नहीं बनते है। आर्थिक मजबूरीवश या विवाह की लालसा भी इन का कारण बनता है।

जटिल पात्रों में नारी की भूमिका में जटिल पात्रों जिसका कोई नाम है या नाम नहीं है ऐसा संबंध। कहानी में स्त्री - पुरुष संबंधों के संदर्भ में कुछ ऐसे पात्रों के भीतर झांक्कर उनके अंतर्द्वन्द्व और वेदना के साथ - साथ उनकी जिजीविषा को पहचाने का प्रयास किया है जिनके भीतर किसी कारणवश मनोग्रंथि बन गई है। ये मनोग्रंथि उन्हें जीवन को अकुंठ भाव से स्वीकार नहीं करने देती, इसलिए वे भावनात्मक रूप से अवरुद्घ जीवन जीते रहते है। कभी ये अवरुद्घ भावनाएं अपना मार्ग ढूँढ लेती है तो कभी सामाजिक संस्कारों के चोले में उदातीकरण की प्रक्रिया में दिखाई देती है।

षष्टम अध्याय :- हिन्दी कहानियों में चित्रित महानगरों की जीवनशैली

महीप सिंह मुबंई और दिल्ली जैसे दो महानगरों में अपना जीवन व्यतित किया है। जिसके प्रभाववश उनकी रचनाओं में महानगरीय परिवेश का प्रभाव दिखाई देना स्वाभाविक है। महानगरों की चकाचौंध, औधोगीकरण एवं विकास ने सामान्य व्यक्ति को भी प्रभावित किया है। लेकिन महानगरों की समस्याओं ने सामान्य व्यक्ति को संवेदनहीन बना दिया है।

कहानीकार महानगरीय संवेदनहीनता के साथ - साथ नारी के संबंधों में मूल्यहास की स्थिति को लेकर भी चिन्तित मालूम होते है। उनका कहना है कि नारी महानगरों में रहकर स्वार्थी, आत्मकेन्द्वी, खुदगर्ज बनती जा रही है। जिससे नारी के बाकी सारे संबंधों पर प्रभावित होना स्वाभाविक है। पाश्चात्य संस्कृति, भौतिकवादिता के प्रभाव से नारी की महानगरीय जीवन में कई विडंबनाओं, समस्याओं और विषमताओं से ग्रस्त मालूम होता है।

महीप सिंह की कहानियाँ ज्यादातर महानगरीय जीवन के संदर्भ को लेकर है। 'सन्नाटा ' , ' लोग ' , ' पत्नियॉ ' , ' झूठ ' , ' धिराव ' , ' उजाले के उल्लू ' , ' काला बाप गोरा बाप ' , ' एक स्त्री एक पुरुष ' , ' गंध ' , ' शोर ' , ' एक लड़की शोभा ' , ' ब्लाटिंग पेपर ' आदि कहानियाँ नारी की महानगरीय समस्याओं को चित्रित करती है।

महानगर की भीड़ के बीच नारी अपने अस्तित्व को लेकर निरर्थकता का अनुभव करती है। महानगरीय व्यस्तता में नारी एकाधिक परिस्थितियों के बीच संतुलन स्थापित न कर पाने की वजह से मानसिक रुप से रुग्णता अनुभव करती है। ' सन्नाटा ' में भाग दौड़ और व्यस्तता की जिन्दगी में माँ - बेटी के रिश्तों में परस्पर उदासीनता और निरपेक्षता मालूम होती है।

आर्थिक संकट के कारण कभी विरोध, विद्रोह, हताशा, विवशता जैसी कसक भी महीप सिंह ने महानगरीय परिवेश की कहानियों में उल्लेख किया है। गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, कालाबजारी आदि के बढते प्रभाव से नारी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाती है। ' वेतन के पैसे ' मध्यमवर्गीय आर्थिक संकट का सबसे बुरा प्रभाव गृहिणी को झेलना पड़ता है।

सप्तम अध्याय :- महीप सिंह की कहानियों में शिल्प - विधान की विशेषताएँ

महीप सिंह के कथा शिल्प की एक प्रमुख विशेषता है उनकी कलात्मक निस्संगता वे अपने समूचे रचना परिवेश में उस दूरी का निर्वाह करने में कहानी लेखक की अप्रत्यक्ष डायरी बनकर रह जाती है। निस्संगता को अर्जित करने के लिए वे कुछ विशिष्ट कला युक्तियों का भी आक्षय लेते है। महीप सिंह ने कहानियों में कथानक में कहानी के कथ्य में सत्य को रचनात्मक रुप में प्रस्तुत किया है। जिसमें मानव मूल्यों की सही पहचान और उन्हें उजागर करने का अपूवॅ समर्थ है। मनुष्य की वर्तमान जीवन की विकृतियाँ, विडंबनाओं, विषमताओं के बीच एवं सक्रियता का बोध इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने समाज, व्यक्ति, परिवार में आए तनाव को अपनी कहानी का कथ्य बनाकर प्रस्तुत किया है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण एक महत्व का अंग बन जाता है। महीप सिंह के ज्यादातर नारी पात्र ऐसे है, जो आधुनिक जिन्दगी की हताशा, संघर्ष, कुंठा, स्वार्थवृत्ति, अकेलेपन, बेकारी, यौनशोषण आदि के बीच सफर करते है। जो दफ्तरों में संघर्ष, भीड़ के बीच रेंगते, सफर करते धर के भीतर झगडा, विवश होकर मूल्य संकट से पीडित पात्र स्वंय अपने अस्तित्व के प्रति आस्थावान मालूम पड़ते है। उन्होंने ज्यादातर अपने अनुभवों के क्षेत्र से पात्रों को उपस्थित कर मानवीय संबंधों की व्याखया की है।

संवाद कहानी का महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। एक कहानीकार को संवाद के गठन का भी उचित ध्यान रखना चाहिए। संवाद संक्षिप्त एवं सारगर्भित होना चाहिए। महीप सिंह की कहानियों की संवाद योजना खूबज सराहनीय है। वहाँ संवादों पात्रों के अनुकूल प्रयुक्त हुए है तथा पात्रों के मानसिक स्तर पर स्थिति को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। उनकी कहानियों में संवादों के द्वारा पात्र के व्यक्तित्व को मली - भाँति समझा जा सकता है, क्योंकि भाषा के सूक्ष्म अन्तर के माध्यम से ही वह पात्र के व्यक्तित्व को रेखांकित कर देते है। ' उजाले के उल्लू ' कहानी में क्रिश्चयन महिला मिसेज पिंटो के संवाद में बम्बइया भाषा का उच्चारण और शैली देखने को मिलती है। महीप सिंह ने अपनी कहानियों में पात्रानुरुप, भावानुरूप, प्रसंगानुरुप, संक्षिप्त संवादों की रचना कर वास्तविक परिस्थिति में अवगत करवाते है।

देशकाल या वातावरण कहानी का चौथा मूल स्वरूप माना जाता है। इसकी आयोजना कहानी को विश्वसनीय एवं यथार्थत्मक पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए की जाती है। महीप सिंह की सारी कहानियों में महानगर का वातावरण दिखाया गया है, मगर जगह - जगह अलग बताया गया है। लेकिन यह बात भी महत्वपूर्ण है कि उनके कथानक व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है। इसी कारण उनकी कहानियों का चित्रण अत्यंत स्वाभाविक तथा विश्वसनीय बन पड़ा है। कभी - कभी तो उनके द्वारा किया गया चित्रण हमारी आँखों के सामने आ जाता है। यही महीप सिंह की कहानियों की सफलता का राज है।

भाषा कहानी का प्रमुख उपकरण माना जाता है। सरल, स्वाभाविक और सहज तथा मुहावरों, कहावतों के युक्त भाषा कहानी को व्यवहारिक, विश्वसनीयता प्रदान करती है। महीप सिंह की भाषागत बातें निम्न लिखी है -

(1) अग्रेंजी शब्द :- टाई, स्टेशन, डायरी, नोट, इंटरव्यू, ड्राइंग, रुम, मेडिकल, लंच,फिक्स।

(2) पंजाबी - हरियाणवी शब्द :- झस कहाड प्रसाद, झाबे, अकालपुरख, मोख, बीडो।

(3) आवृतिमूलक शब्द :- राशन - पानी, आस - पास, हिसाब - किताब, छेड़ - छाड।

(4) व्याकरणच्युत शब्द :- ' मूखॅ के लिए मूरख ' , ' दर्शन के लिए दरसन ' , ' प्रसाद के लिए परसाद ' , ' पंचायत के लिए पंचाइत '।

(5) कहावतें :- " धर की मुर्गी दाल बराबर। " (पत्नियाँ)

(6) मुहावरें :- " एक बहुत बढिया मुर्गा है। " (सीधी रेखाओं का वृत)

कहानियों की ' शैली ' विषयवस्तु के अनुसार किस्सागोई, आत्म - कथात्मक, डायरी और पत्रात्मक,एकालाप, वणॅनात्मक जैसी शैली का प्रयोग हुआ है। यहाँ डायरी और पत्रात्मक शैली का एक उदाहरण है - " उस दिन शाम को आरुप अपने सामने के दीवान पर पैर फैलाए आराम कुर्सी पर बैठा हुआ किल्पबोडॅ पर कागज लगाकर पत्र लिख रहा था। " (झूठ)

हर एक कहानीकार का कहानी लिखने के पीछे कोई - न - कोई उद्देश्य तो होता है। महीप सिंह ने सिफॅ मनोरंजन मात्र के लिए कहानियों नहीं लिखी है, उन्होंने अपनी कहानियों में नारी समस्याओं को अधिक मात्रा में उठाया है और नारी को उन समस्याओं के प्रति आकृष्ट करना उनका उद्देश्य रहा है। इसके साथ उन्होंने मानवी के आपसी संबंधों को बहुत अच्छी तरह दिखाया है। संबंधों के द्वारा

लोगों का ध्यान खींचना भी उनका उद्देश्य रहा है और अपने उद्देश्य तक अपनी कहानियों को पहुँचाने में महीप सिंह जी सफल रहे है।

* **उपसंहार :-**

महीप सिंह ने महानगरों में जीवन यापन किया है, जिसके प्रभाववश उन की कहानियों में महानगरीय परिवेश आधारित संदर्भ निरुपित हुए है। उन्होंने ने छोटी - छोटी धटना को अपनी कहानी का आधार बनाया है, जिसके कारण वह धटनाप्रधान रचनाकार भी है। कहानी के तत्वों में बंधकर कहानी का निर्माण में आस्था नहीं रखते है, यानी कि उन्होंने अपनी कहानियों में नूतन प्रयोग भी कियें है। उनकी ज्यादातर कहानियों में नारी की सामाजिक संबंधों की विषमता, महानगरीय जीवन संबंधित जटिलताएँ आदि पहलू उभारे है। महानगरीय चकाचौंध, ग्राम्य - महानगरीय संस्कारों की टकराहट,आर्थिक विपन्नता, मूल्य विधटन की प्रक्रिया, अकेलेपन से कुंठित चरित्र, मृत्युबोध से उत्पन्न तनाव आदि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से व्यक्त हुए है। इनकी अनेक कहानियों में नारी की एक सशक्त दृष्टि दिखाई देती है, जो नारी को विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने, उसमें सहज होकर उसे सचेतन दृष्टि प्रदान कर सक्रिय जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। नारी विवाहित, अविवाहित, तलाकशुदा, रखैल, वेश्या सभी रुपों में पात्र बनी है। इनकी विशेषता यह रही है कि ये सब आत्मसजग तथा आत्मविश्वासी है तथा कुछ हद तक आत्मनिर्भर भी।

* **परिशिष्ट :-**

इसके अंतर्गत सहायक ग्रंथों की सूची तथा अन्य सामग्री का निर्देश किया जाएगा।

:- संदर्भ ग्रंथ सूची :-

*** आधार ग्रंथ सूची :- कहानीकार महीप सिंह**

(कहानी संग्रह)

(1) सुबह के फूल : राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ, (1959)

(2) उजाले के उल्लू : हिन्दी भवन, इलाहाबाद, (1964)

(3) धिराव : राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, (1969)

(4) कुछ और कितना : आशा प्रकाशन, दिल्ली, (1973)

(5) कितने संबंध : लिपि प्रकाशन, दिल्ली, (1979)

(6) इक्यावन कहानियाँ : अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, (1980)

(7) धूप की उंगलियों के निशान : अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, (1994)

(8) सहमे हुए : अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, (1998)

महीप सिंह की समग्र कहानियाँ (तीन खण्ड)

खण्ड - 1 - सुबह की महक : अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, (2000)

खण्ड - 2 - क्षणों का संकट : अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, (2000)

खण्ड - 3 - संबंधों का सन्नाटा : अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, (2000)

*** सहायक संदर्भ ग्रंथ**

(1) यादव (डॉ.) अशोककुमार : कहानीकार महीप सिंह :मानवीयसंबंधों की सचेतन दृष्टि (2010) नमन प्रकाशन, 4231 - 1, अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली - 110002

करक कलेजे माहि (2005) (संपादक) भारत

(2) सचदेव (डॉ.) कमलेश : पुस्तक भंडार, फेस, ई - 1 - 265 ए, सोनिया विहार, दिल्ली - 94

(3) सचदेव (डॉ.) कमलेश : महीप सिंह का कथा संसार (2002) अभिव्यंजना प्रकाशन, बी - 70 / 72, डी.एस.आइ.डी.सी कोम्प्लेक्स,लारेंस रोड, नई दिल्ली - 110035

(4) यादव राजेन्द्र : अनुभव और अभिव्यक्ति(1996) वाणी प्रकाशन,दरियागंज, नई दिल्ली - 110002

(5) लाल (डॉ.) लक्ष्मीनारायण : हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास (1974), साहित्य भवन (प्रा) लिमिटेड, इलाहाबाद - 211003

(6) मधुरेश : हिन्दी का विकास (2009) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद – 211003

(7) चतुवेर्दी रामस्वरुप : हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास (1993) लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद - 01

(8) हरजीभाई वाधेला : महीप सिंह की कहानी कला - पाश्वॅ, पब्लिकेशन, अहमदाबाद (2009)

(9) अवस्थी (डॉ.) देवीशंकर : नयी कहानी : संदभॅ और प्रकृति (1973) राजकमल प्रकाशन प्रा. लि,फैजबाजार, दिल्ली - 06

(10) डॉ. नगेन्द्र (संपादक) : हिन्दी साहित्य का इतिहास (1999) मयूर पेपर बैक्स, ए - 95,सेक्टर - 5,नोएडा - 20130

*** पत्रिकाएँ**

(1) हंस : सं. राजेन्द्र यादव
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. 2 / 36 अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली - 110002

(2)संचेतना : सं. महीप सिंह
डी.के आफसेट, रोहतक रोड ,इंडस्ट्रियल
काम्प्लेक्स, नांगलोई, दिल्ली - 110041

(3) भाषा : सं. नन्द किशोर मिश्रा
नियंत्रक प्रकाशन, दिल्ली -54

(4) राष्ट्रभाषा : सं. अनन्तराय त्रिपाठी
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा,
महाराष्ट्र - 442003

(5) साक्षात्कार : सं. देवेन्द्र दीपक
साहित्य अकादमी, संस्कृति भवन,बाण गंगा,
भोपाल -03

*** शब्द - कोश**

(1) राष्ट्रभाषा - कोश : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ,
हिन्दी नगर,वर्धा, महाराष्ट्र - 442003